Economics
B.A. Part-II (Hons)
Paper - 4
Module - 1

Manjari Nath - Lecture No - 46

हैबरलर का सिद्धान्त :-

हैबरलर के सिद्धान्त के अनुसार विभिन्न लागत स्थितियों के अन्तर्गत उत्पादन संभावना वक्र का रूप यह निर्धारित करता है कि अवसर लागत सिद्धान्त के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार पर उससे प्राप्त होने वाले लाभ क्या हैं। यदि X की अतिरिक्त मात्रा प्राप्त करने के लिए Y छोड़ी जाने वाली अपेक्षित मात्रा स्थिर रहती है तो उत्पादन संभावना वक्र एक सरल रेखा होगी और वह वक्र बताएगा कि अवसर लागतें स्थिर रहती हैं। यदि X की अतिरिक्त मात्रा प्राप्त करने के लिए Y की अपेक्षाकृत अधिक मात्रा छोड़नी पड़ती है तो उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दु की ओर नतोदर (Concave) होगा और बताएगा कि अवसर लागतें बढ़ रही हैं। यदि X की अतिरिक्त मात्रा प्राप्त करने के लिए Y की अपेक्षाकृत कम मात्रा छोड़नी पड़ती है तो उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर (Convex) होगा जो बताता है कि अवसर लागतें घट रही हैं।

इस प्रकार हैबरलर के सिद्धान्त को हम तीन परिस्थितियों में विवेचना कर सकते हैं :-

(i) स्थिर अवसर लागतों के अन्तर्गत व्यापार
(ii) बढ़ती अवसर लागतों के अन्तर्गत व्यापार
(iii) घटती अवसर लागतों के अन्तर्गत व्यापार

स्थिर अवसर लागतों के अन्तर्गत व्यापार :-

स्थिर अवसर लागतों के अन्तर्गत उत्पादन सम्भावना वक्र एक सरल रेखा होती है। इसे हम निम्नांकित चित्र द्वारा समझ सकते हैं :-

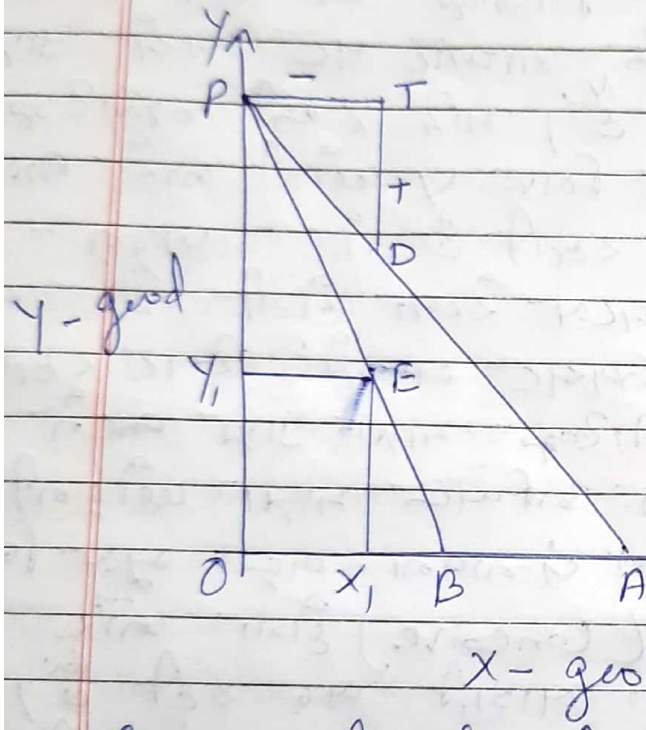

PA देश A का उत्पादन सम्भावना वक्र है जबकि PB, देश B का उत्पादन सम्भावना वक्र है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से पहले देश B, X-good का OX_1 एवं Y-good का OY_1 उत्पादन एवं उपभोग करता है।

स्थिर लागतों के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के बाद PA जो देश A का उत्पादन सम्भावना वक्र है, वही अन्तर्राष्ट्रीय कीमत रेखा बन जाती है तो देश B, E बिन्दु से P बिन्दु पर पहुँच जाता है। जबकि अपने उपभोग-उत्पादन का P बिन्दु पर ले जाता है क्योंकि Y-वस्तु के उत्पादन में वह विशिष्टता हासिल कर लेता है। इस बिन्दु पर यह देश A को Y-वस्तु की TD मात्रा का

निर्यात करता है एवं देश A से X-वस्तु की PT मात्रा का आयात करता है। इस स्थिति में देश B, जो देश A का व्यापारिक देश है, उसे निश्चित तौर पर लाभ होता है।

परन्तु देश A को इस व्यापार से अधिक लाभ नहीं हुआ क्योंकि व्यापार के बाद भी वहाँ कीमत रेखा PA ही बरकरार रही।

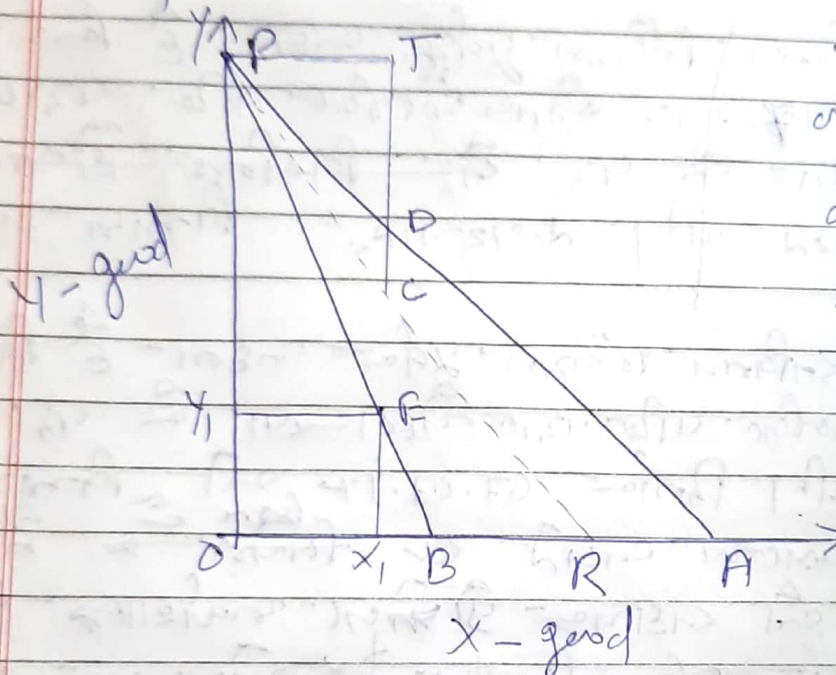

अब यदि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के बाद PR नई कीमत रेखा बनती है तो देश A का संतुलन बिन्दु E से चलकर C पर पहुँच जाता है जो देश B

अब देश A को TC मात्रा Y-वस्तु का निर्यात करेगा और X-वस्तु के PT मात्रा का आयात करेगा। इस परिस्थिति में देश A को भी सापेक्षिक लाभ होगा क्योंकि उसकी सापेक्षिक कीमतों में हुए परिवर्तन के कारण कीमत रेखा PR पर इन्हीं हो चुकी है।

इन दोनों चित्रों से स्पष्ट है कि लागत मानतों में भी सापेक्षित कीमतों में अनुपात की सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संभव है।